लग जाता है कि उनको उचित ताप मिल रहा है। यदि चूजे ऊष्मा स्त्रोत के पास एकत्र हो जायें, तो समझना चाहिए कि चूजों को ठीक से ताप नही मिल रहा है। अगर चूजे ऊष्मा स्त्रोत से दूर हो तों यह बात सिद्ध करती है कि चूजों को गर्मी लग रही है। व्यावहारिक तौर पर प्रारम्भ में 1 वाट प्रति चूजे के हिसाब से व बाद में 1/2 वाट प्रति चूजे के हिसाब से बल्व लगाना चाहिए।

- छोटे चूजे पानी के बर्तनों में न घुस पायें इसके लिए पानी के बर्तनों में कंकड़ डाल देना चाहिए। चूजों को गुनगुना पानी भी दिया जा सकता है।
- बिजली न होने पर अंगीठी व बुरादे की बुखारी या स्टोव से कमरा गर्म करना चाहिए व रोशनी का प्रबन्ध करना चाहिए।
- कमरें को गर्म करने के लिए टाट या बोरी से सभी ओर बन्द करदें। खिड़कियों में प्लास्टिक शीट लगा देनी चाहिए। जिससे अन्दर धूप आ सके पर सीधी हवा न घुस पाये।
- ध्यान रहे कि स्वच्छ हवा चूजों को हमेशा मिलती रहे। अगर बाड़े में अमोनिया की बदबू आने लगे तो हवा का आवागमन बढ़ा देना चाहिए।
- विछावन सूखा रहना चाहिए, सप्ताह में एक बार विछावन को अवश्य उलट–पलट कर देना चाहिए। अगर विछावन गीली महसूस हो तो 10 किलोग्राम चूना प्रति 100 वर्ग गज के हिसाब से विछावन में मिलाकर फिर से विछावन का उपयोग कर सकते है।
- छत को ऊँची एवं सम्भव हो तो ताप अवरुद्ध अथवा इन्सुलेटेड कर दें।
- इस प्रकार यदि हम गर्मी एवं सर्दी के मौसम में मुर्गियों का समुचित प्रबन्धन करते हैं तो किसानों एवं पशुपालकों को अधिक से अधिक लाभ प्राप्त होगा साथ ही आर्थिक रूप से मजबूत एवं समृद्धशाली होंगे।

संपादक:

निर्मल सिंह दहिया, निदेशक प्रसार शिक्षा
दीप नारायण सिंह, विभागाध्यक्ष, पशुधन प्रक्षेत्र परिसर
योगेन्द्र सिंह जादौन, उप–निदेशक, प्रसार शिक्षा

प्रकाशक

प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

Folder : PN/74/2026/DEE/BASU-Patna

गर्मी एवं सर्दी के मौसम में मुर्गियों का उचित प्रबन्धन

आलेख:

दीप नारायण सिंह, रंजना सिन्हा, सुचित कुमार,
योगेन्द्र सिंह जादौन एवं मनमोहन कुमार

प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

गर्मी एवं सर्दी के मौसम में मुर्गियों का उचित प्रबन्धन

अलग–अलग मौसमों का मुर्गी की उत्पादकता पर काफी नाकारात्मक प्रभाव पडता है। किसान भाई विभिन्न मौसमों विशेषतया गर्मी तथा सर्दी में निम्नलिखित सावधानियां अपनाकर अपनी मुर्गियों को मौसम के प्रकोप से बचायें रख सकतें है।

गर्मी में मुर्गियों की देखभाल

बडी मुर्गियाँ ठण्डे मौसम की अपेक्षा गर्मी से ज्यादा प्रभावित होती है।

(क) आवास का प्रबन्धः–

आवास की लम्बाई पूर्व व पश्चिम दिशा में होना चाहिए, जिससे सूर्य की किरणें कम पड़े।

- आवास दोनों तरफ से खुला होना चाहिए ताकि हवा का उचित आवागमन हो सके।
- आवास की छत पर बाहर से सफेदी कर देना चाहिए।
- छत पर ऊष्मा के कुचालक सीट अथवा छप्पर का प्रयोग करना चाहिए।
- आवास के बीच में पेड़ लगाना लाभदायक होता है।
- आवास की छत पर हरी लतायें चढ़ा देना चाहिए।
- आवास के दोनो तरफ बोरी के पर्दे लगा देना चाहिए जिन पर दिन में पानी का छिड़काव करना लाभदायक होता है।
- बिजली के पंखे, एक्जॉस्ट पंखों व कूलर का प्रयोग करना चाहिए।
- मुर्गियों को गर्मी में अधिक स्थान प्रदान करना आवश्यक होता है।

(ख) विछावन का प्रबन्धः–

- विछावन की मोटाई 2–3 इंच रखनी चाहिए।
- विछावन को समय–समय पर उलटते–पलटते रहना चाहिए।
- विछावन ज्यादा धूलयुक्त नही होना चाहिए अन्यथा मुर्गियों को सांस की बीमारी हो सकती है।
- विछावन को आवश्यकतानुसार बदलते रहना चाहिए।

(ग) जल का प्रबन्धः–

- पानी के बर्तनों की संख्या बढा देना चाहिए तथा दिन में कम से कम चार बार पानी देना चाहिए।
- स्वच्छ व ठण्डा पानी देना चाहिए।
- सामान्यतया दाना व पानी की खपत का अनुपात 1:2 रहता है लेकिन तापक्रम बढ़ने से पानी की खपत बढ़ जाती है।
- मिट्टी के बर्तन में पानी ज्यादा देर तक ठण्डा रहता है।
- आवश्यकतानुसार पानी बदलते रहना चाहिए।
- पानी वाली पाइप लाइन पर सफेदी करना तथा टैंक पर बोरे का टुकडा लपेट देना अच्छा रहता है।
- पानी में शीरा या गुड़ मिलाना लाभदायक होता है।

(घ) आहार व्यवस्थाः–

- दाने को पानी से गीला कर मुर्गियों को देना चाहिए। ध्यान रहे दाना उसी दिन समाप्त होना चाहिए अन्यथा फफूंदी लग जायेगा।

- दाने के बर्तन में दाना 3–4 बार देना चाहिए।
- मुर्गियों को गर्मी में दाना पेलेट के रूप में देना लाभदायक होता है जिससे उनकी आहार ग्रहण करने की क्षमता बढ़ जाती है तथा साथ ही दाना का नुकसान भी कम होता है।
- आहार दिन के ठण्डे समय (सुबह–शाम) देना चाहिए।
- जैसे–जैसे तापक्रम बढता है मुर्गी को ऊर्जा की आवश्यकता कम हो जाती है। अतः दाने में अन्य पोषक तत्वों की मात्रा बढ़ा देनी चाहिए।

सर्दी में मुर्गियों का प्रबन्धः–

- ठंडक के दिनों में चूजों को उचित तापक्रम देना आवश्यक होता है। होवर के नीचे पलने वाले चूजों को उनके स्वभाव के अनुसार तापक्रम देना पडेगा। अगर चूजे आराम से होवर के नीचे घूम–फिर कर दाना व पानी ले रहे है तो यह पता